कृतिपत्रिका का प्रारूप

समय 3 घंटे] [अंक 80

विभाग 1 : गद्य : अंक 20

कृति 1 (अ) परिच्छेद लगभग 180 से 200 शब्दों में 06

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(आ) परिच्छेद लगभग 180 से 200 शब्दों में 06

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(इ) लघुत्तरी – उत्तर 80 से 100 शब्दों में (तीन में से दो) 06

(ई) एक वाक्य में उत्तर (चार में से दो) 02

(साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान पर)

विभाग 2 : पद्य : अंक 20

कृति 2 (अ) पद्यांश लगभग 8 से 12 पंक्तियों में 06

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(आ) पद्यांश लगभग 8 से 12 पंक्तियों में 06

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(इ) रसास्वादन कीजिए (100 से 120 शब्दों में) (दो में से एक) 06

(ई) एक वाक्य में उत्तर (चार में से दो) 02

(साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान पर)

विभाग 3 : विशेष अध्ययन : अंक 10

कृति 3 (अ) पद्यांश लगभग 8 से 12 पंक्तियों में 06

1. आकलन कृति (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
2. शब्द संपदा (चार घटक आधा अंक प्रत्येक के लिए) 02
3. अभिव्यक्ति (40 से 50 शब्दों में) 02

(आ) लघूत्तरी – उत्तर 80 से 100 शब्दों में (दो में से एक) 04

विभाग 4 : व्यावहारिक हिंदी अपठित गद्यांश और पारिभाषिक शब्दावली : अंक 20

कृति 4 (अ) दीर्घोत्तरी – उत्तर 100 से 120 शब्दों में 06

अथवा

परिच्छेद लगभग 180 से 200 शब्दों में

1. आकलन कृति 02
2. शब्द संपदा 02
3. अभिव्यक्ति 02

(आ) लघूत्तरीय दो में से एक का उत्तर 80 से 100 शब्दों में लिखिए। 04

अथवा

सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

(व्यावहारिक हिंदी के पाठ पर आधारित)

(इ) अपठित परिच्छेद लगभग 180 से 200 शब्दों में 06

1. आकलन कृति 02
2. शब्द संपदा 02
3. अभिव्यक्ति 02

(ई) पारिभाषिक शब्दावली (आठ में से चार) 04

विभाग 5 : व्याकरण : अंक 10

कृति 5 (अ) काल परिवर्तन करके वाक्य फिर से लिखिए। (चार में से दो) 02

(आ) अलंकार (पहचानना चार में से दो) 02

(इ) रस (पहचानना चार में से दो) 02

(ई) मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए। (चार में से दो) 02

(उ) वाक्य शुद्धिकरण करके वाक्य फिर से लिखिए। (चार में से दो) 02

अपेक्षित प्रश्नसंग्रह 2

८० से १०० शब्दों में उत्तर

[प्रश्न १ (इ) : कुल अंक ६]

टिप्पणी : कृति १ (इ) प्रश्न प्रश्नोत्तर स्वरूप में होगा, जिसका उत्तर विद्यार्थियों को ८० से १०० शब्दों में लिखना होगा। इसमें पठित गद्यपाठों के आधार पर प्रश्न पूछे जाएँगे। विद्यार्थियों को इनमें से दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। इसके लिए कुल ६ अंक हैं।

कृतिपत्रिका के प्रश्न १ (इ) के लिए

पाठ २ | निराला भाई

प्रश्न. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर ८० से १०० शब्दों में लिखिए :

(१) निराला जी की चारित्रिक विशेषताएँ ८० से १०० शब्दों में लिखिए।

उत्तर : निराला जी मानवता के पुजारी थे। उनमें मानवीय गुण कूट-कूट कर भरे हु थे। उन्हें स्वयं से अधिक दूसरों की अधिक चिंता होती थी। खुद निर्धनता में जीव बिताते रहे, पर दूसरों के आर्थिक दुखों का भार उठाने के लिए सदा तत्पर रहते थे आतिथ्य करने में उनका जवाब नहीं था। अतिथियों को सदा हाथ पर लिये रहते थे उनके लिए खुद भोजन बनाने और बर्तन माँजने में उन्हें हर्ष होता था। घर में सामान होने पर अतिथियों के लिए मित्रों से कुछ चीजें माँग लाने में शर्म नहीं करते थे। उदा इतने थे कि अपने उपयोग की वस्तुएँ भी दूसरों को दे देते थे और खुद कष्ट उठाते थे

साथी साहित्यकारों के लिए उनके मन में बहुत लगाव था। एक बार कवि सुमित्रानंद पंत के स्वर्गवास की झूठी खबर सुनकर वे व्यथित हो गए थे और उन्होंने पूरी रा जाग कर बिता दी थी।

निराला जी पुरस्कार में मिले धन का भी अपने लिए उपयोग नहीं करते थे। अप अपरिग्रही वृत्ति के कारण उन्हें मधुकरी खाने तक की नौबत भी आई थी। इस बा को वे बड़े निश्छल भाव से बताते थे।

उनका विशाल डील-डौल देखने वालों के हृदय में आतंक पैदा कर देता था, प उनके मुख की सरल आत्मीयता इसे दूर कर देती थी।

निराला जी से अन्याय सहन नहीं होता था। इसके विरोध में उनका हाथ और उनकी लेखनी दोनों चल जाते थे।

निराला जी आचरण से क्रांतिकारी थे। वे किसी चीज का विरोध करते हुए कठिन चोट करते थे। पर उसमें द्वेष की भावना नहीं होती थी।

निराला जी के प्रशंसक तथा आलोचक दोनों थे। कुछ लोग जहाँ उनकी नम्र उदारता की प्रशंसा करते थे, वहीं कुछ लोग उनके उद्धत व्यवहार की निंदा करते नहीं थकते थे।

निराला जी अपने युग की विशिष्ट प्रतिभा रहे हैं। उनके सामने अनेक प्रतिकूल परिस्थितियाँ आईं पर वे कभी हार नहीं माने।

(२) निराला जी का आतिथ्य भाव ८० से १०० शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : निराला जी में आतिथ्य सत्कार का पुराना संस्कार था। वे अतिथि को देवता के समान मानते थे। अपने अतिथि की सुविधा में कोई कसर बाकी नहीं रखते थे। वे अतिथि को अपने कक्ष में ठहराते थे। उसके लिए स्वयं भोजन तैयार करते थे। जूठे बर्तन भी वे खुद माँजते थे। अतिथि सत्कार के लिए आवश्यक सामान घर में न होता तो वे अपने हित-मित्रों से माँगकर ले आते थे, पर अतिथि सेवा में कोई कमी नहीं रखते थे। कई बार तो वे कवयित्री महादेवी वर्मा के यहाँ से भोजन बनाने के लिए लकड़ियाँ तथा घी आदि माँगकर ले आए थे।

निराला जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उनका कक्ष भी सुविधाओं से रहित था, पर अतिथि के लिए उनके दिल में अपार श्रद्धा थी। एक बार प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त निराला जी का आतिथ्य ग्रहण करने आए थे। उस समय उन्होंने उनका जो सत्कार किया था वह देखते ही बनता था। निराला जी गुप्त जी के बिछौने का बंडल खुद बगल में दबाकर और दियासलाई की तीली के प्रकाश में तंग सीढ़ियों का मार्ग दिखाते हुए उन्हें अपने कक्ष में ले गए थे। कक्ष प्रकाश और सुख सुविधा से रहित था, पर निराला जी की विशाल आत्मीयता से भरा हुआ था। वे गुप्त जी की सुविधा के लिए नया घड़ा खरीदकर उसमें गंगाजल ले आए। घर में धोती-चादर जो कुछ मिल सका सब तख्त पर बिछा कर गुप्त जी को प्रतिष्ठित किया था। निराला जी का आतिथ्य भाव अपनी किस्म का निराला था।

पाठ ४ | आदर्श बदला

(३) 'आदर्श बदला' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

(सितंबर '२१)

उत्तर : अपने पिता को मृत्युदंड दिए जाने पर बैजू अपनी कुटिया में विलाप कर

रहा था। उस समय बाबा हरिदास ने उसकी कुटिया में आकर उसे ढाढ़स बँधाया। कि वे उसे ऐसा हथियार देंगे, जिससे वह अपने पिता की मौत का बदला ले सके।

बाबा हरिदास ने बारह वर्षों तक बैजू को संगीत की हर प्रकार की बारीकि सिखाकर उसे पूर्ण गंधर्व के रूप में तैयार कर दिया। मगर इसके साथ ही उन्होंने उ यह वचन भी ले लिया कि वह इस रागविद्या से किसी को हानि न पहुँचाएगा।

इसके बाद वह दिन भी आया जब बैजू आगरा की सड़कों पर गाता हुआ निकल आगरा में गाने के नियम के अनुसार उसे बादशाह के समक्ष पेश किया गया और न के अनुसार तानसेन से उसकी संगीत प्रतियोगिता हुई, जिसमें उसने तानसेन को कु तरह परास्त कर दिया। तानसेन बैजू बावरा के पैरों पर गिरकर अपनी जान की भी माँगने लगा। इस मौके पर बैजू बावरा उससे अपने पिता की मौत का बदला लेकर उ प्राणदंड दिलवा सकता था। पर उसने ऐसा नहीं किया। बैजू ने तानसेन की जान बख दी। इस तरह बैजू बावरा ने तानसेन का गर्व नष्ट कर उसे मुँह की खिलाकर उस अनोखा बदला लेकर उसे श्रीहीन कर दिया था। यह अपनी तरह का आदर्श बदल था। इसलिए 'आदर्श बदला' शीर्षक इस कहानी के उपयुक्त है।

(४) 'बैजू बावरा संगीत का सच्चा पुजारी है' इस विचार को स्पष्ट कीजिए। ***(मार्च '२२)***

उत्तर : बैजू बावरा ने बारह वर्ष तक बाबा हरिदास से संगीत सीखने की कठि तपस्या की थी। वह उनका एक आज्ञाकारी शिष्य था। उसकी संगीत शिक्षा पूरी हो जाने के बाद बाबा हरिदास ने जब उससे यह प्रतिज्ञा करवाई कि वह इस रागविद्या से किसी को हानि नहीं पहुँचाएगा, तो भी उसने रक्त का घूँट पी कर इस गुरु आदे को स्वीकार कर लिया था। गुरु के सामने उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला।

बैजू बावरा की संगीत कला की धाक दूर-दूर तक फैल गई थी। उसके संगीत में जादू का असर था। बैजू बावरा को संगीत ज्ञान पर तानसेन की तरह कोई अहंकार नहीं था। गानयुद्ध में तानसेन को पराजित करने पर भी वह अपनी जीत और संगीत का प्रदर्शन नहीं करता। बल्कि वह तानसेन को जीवनदान दे देता है। वह उससे केवल यह माँग करता है कि वह इस नियम को खत्म करवा दे कि जो कोई आगरा की सीमा के अंदर गाए, वह अगर तानसेन की जोड़ का न हो, तो मरवा दिया जाए। उसकी इस माँग में भी गीत-संगीत की रक्षा करने की भावना निहित है।

इस प्रकार इसमें कोई संदेह नहीं है कि बैजू बावरा संगीत का सच्चा पुजारी था।

पाठ ६ | पाप के चार हथियार

(५) 'पाप के चार हथियार' पाठ का संदेश लिखिए। *(सितंबर '२१)*

उत्तर : 'पाप के चार हथियार' पाठ में लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' ने एक ज्वलंत समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है। संसार में चारों ओर पाप, अन्याय और अत्याचार व्याप्त है, फिर भी कोई संत, महात्मा, अवतार, पैगंबर या सुधारक इससे मुक्ति का मार्ग बताता है, तो लोग उसकी बातों पर ध्यान नहीं देते और उसकी अवहेलना करते हैं। उसकी निंदा करते हैं। लेकिन यही लोग सुधारकों, महात्माओं की मृत्यु के पश्चात उनके स्मारक और मंदिर बनाते हैं और उनके विचारों और कार्यों का गुणगान करते नहीं थकते। उन लोगों के मन में उसके लिए श्रद्धा की भावना उमड़ पड़ती है और वे उसके स्मारक और मंदिर बनाने लगते हैं।

इस प्रकार लेखक ने 'पाप के चार हथियार' के द्वारा यह संदेश दिया है कि सुधारकों और महात्माओं के जीते जी उनके विचारों पर ध्यान देने और उन पर अमल करने से ही समस्याओं का समाधान होता है, न कि स्मारक और मंदिर बनाने से।

पाठ ८ | सुनो किशोरी

(६) उड़ो बेटी, उड़ो पर धरती पर निगाह रखकर', इस पंक्ति में निहित सुगंधा की माँ के विचार स्पष्ट कीजिए। *(जुलाई '२२)*

उत्तर : उड़ो बेटी, उड़ो पर धरती पर निगाह रखकर के द्वारा लेखिका का कहना है कि सपने देखना, उन्हें पूरा करने का प्रयास करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। परंतु हमें अपनी महान सभ्यता, अपनी संस्कृति व अपने जीवन मूल्यों को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। अपनी धरती से, अपनी जड़ों से कटकर कोई भी व्यक्ति लंबे समय तक सुखी नहीं रह पाता। जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं, जब पीछे छोड़ दिए गए रिश्ते और लोग हमें याद आते हैं और हमें व्याकुल कर जाते हैं।

(७) पाठ के आधार पर रूढ़ि, परंपरा तथा मूल्यों के बारे में लेखिका के विचार स्पष्ट कीजिए। *(मार्च '२२)*

उत्तर : समय के साथ अपना अर्थ खो चुकी या वर्तमान प्रगतिशील समाज को पीछे ले जाने वाली समाज की कोई भी रीति-नीति रूढ़ि है। रूढ़ि स्थिर होती है। जबकि परंपरा समय के साथ अनुपयोगी हो गए मूल्यों को छोड़ती और उपयोगी मूल्यों को जोड़ती निरंतर बहती धारा परंपरा है। परंपरा गतिशील है। एक निरंतर बहता निर्मल प्रवाह, जो सड़ी-गली रूढ़ि को किनारे फेंकता और हर भीतरी-बाहरी, देशी-विदेशी उपयोगी मूल्यों को अपने में समेटता चलता है।

पाठ १० ओजोन विघटन का संकट

(८) ओजोन विघटन संकट से बचने के लिए किए गए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को संक्षेप में लिखिए। *(मार्च '२२; जुलाई '२२)*

उत्तर : ओजोन विघटन संकट पर विचार करने के लिए अनेक देशों की पहली बैठक १९८५ में विएना में हुई। बाद में सितंबर १९८७ में कनाडा के मांट्रियल शहर में बैठक हुई, जिसमें दुनिया के ४८ देशों ने भाग लिया था। इसके तहत यह प्रावधान रखा गया कि १९९५ तक सभी देश सी. एफ. सी. की खपत में ५० प्रतिशत की कटौती तथा १९९७ तक ८५ प्रतिशत की कटौती करेंगे। सन २०१० तक सभी देश सी. एफ. सी. का इस्तेमाल एकदम बंद कर देंगे। इस दौरान विकसित देश नए प्रशीतकों की खोज में विकासशील देशों की आर्थिक मदद करेंगे।

पाठ ११ कोखजाया

(९) मौसी की स्वभावगत विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : स्नेही : मौसी बड़ी स्नेही थीं। उन्होंने अपने पिता से मिली संपत्ति जबरन अपनी छोटी बहन को सौंप दी। लेखक की पढ़ाई-लिखाई में भी मौसी का योगदान था।

निरभिमानी : मौसी के पति प्रसिद्ध आई ए एस अधिकारी थे। वे हमेशा बड़े-बड़े पदों पर आसीन रहे। गुजरात में जिलाधिकारी रहे। अंत में भारत सरकार के वित्त सचिव के पद से रिटायर हुए थे। परंतु मौसी को कभी भी अपने पति के पद या पावर का घमंड नहीं हुआ।

भावुक हृदया : मौसी बहुत भावुक हृदय की स्वामिनी थीं। एक बार उनके नैहर के गाँव में भयंकर अकाल पड़ा। लोगों के हाहाकार और दुर्दशा से द्रवित होकर उन्होंने अपनी ससुराल से सारा जमा अन्न मँगवाया। आवश्यकतानुसार खरीदवाया भी। और पूरे गाँव के लिए भंडारा खुलवा दिया।

स्वाभिमानी : मौसी सरल हृदया थीं परंतु बड़ी स्वाभिमानी थीं। उनके एकमात्र पुत्र ने धोखे से उनकी सारी संपत्ति औने-पौने दामों में बेच दी। मौसी ने भारी हृदय से उस धोखे को भी आत्मसात कर लिया। परंतु वही पुत्र उन्हें एअरपोर्ट पर अकेले, निराश्रित छोड़कर चला गया। उसने एक बार भी यह नहीं सोचा कि माँ का क्या होगा, वह कहाँ जाएगी? तब मौसी ने वृद्धाश्रम में रहना उचित समझा। लोकलाज के भय से बेटा परिवार के साथ आया अवश्य, पर उनके छटपटाने, गिड़गिड़ाने के बावजूद मौसी ने मिलने से मना कर दिया, उनका मुँह तक नहीं देखा।